पद २७२

(राग: पिलु - ताल: धुमाळी)

बन्सीवालेने मोहलिया प्रान ।।ध्रु.।। मैं दिध बेचन जात बृंदावन। बीच मिला प्रभु आन।।१।। मानिकके प्रभु जमुनाके नीरतीर। बन्सी बजावे गावे तान।।२।।